प्रेस विज्ञप्ति

लोक भवन, राँची

दिनांक : 15 नवम्बर, 2026 :-

(1) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर लोक भवन में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

---

(2) उलिहातु (खूँटी), माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती एवं 'जनजातीय गौरव दिवस' के अवसर पर उनकी जन्मस्थली उलिहातु पहुँचकर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के वंशजों से भी भेंट की।

इसके उपरांत राज्यपाल महोदय ने उलिहातु में आयोजित 'राजकीय बिरसा महोत्सव-2026' को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का जीवन साहस, संघर्ष और स्वाभिमान की प्रेरणादायी गाथा है। उन्होंने जनजातीय समाज को अपने

अधिकारों, अस्मिता और स्वाभिमान की रक्षा के लिए जागरूक एवं संगठित किया। उनका जीवन हमें अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देता है।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि झारखण्ड वीरों और बलिदानियों की भूमि है। भगवान बिरसा मुंडा के साथ-साथ सिद्धू-कान्हू, नीलांबर-पीतांबर, फूलो-झानो, चाँद-भैरव और वीर बुधु भगत जैसे अनेक जननायकों ने देश और समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया। उनका संघर्ष और बलिदान हमारी गौरवशाली विरासत का अभिन्न अंग है। इन महान जननायकों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करें।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लेकर माननीय प्रधानमंत्री जी ने जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास और राष्ट्र निर्माण में उसके योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान एवं पहचान दिलाने की महत्वपूर्ण पहल की है। इससे देश की नई पीढ़ी को जनजातीय नायकों के

संघर्ष, बलिदान और प्रेरणादायी विरासत से परिचित होने का और बेहतर अवसर मिला है।

माननीय राज्यपाल ने झारखण्ड राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर राज्यवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि वर्ष 2000 में लंबे संघर्ष और जनआकांक्षाओं के परिणामस्वरूप झारखण्ड अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार द्वारा अलग राज्य के गठन का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। राज्य स्थापना के 26 वर्ष पूरे होने पर हमें अब तक की उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हुए भविष्य की प्राथमिकताएँ तय करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और अलग राज्य के गठन के पीछे निहित जनआकांक्षाएँ पूरी हों।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं का विस्तार करना आवश्यक है। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा युवाओं को आगे बढ़ने के बेहतर अवसर मिलने चाहिए। साथ ही, विकास की प्रक्रिया में जनजातीय समाज की भाषा, संस्कृति, परंपराओं और

विशिष्ट पहचान का संरक्षण भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के आदर्श केवल स्मरण करने तक सीमित न रहें, बल्कि वे लोगों के कार्यों और संकल्पों में भी दिखाई दें। उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर हमें झारखण्ड के विकास, जनजातीय समाज के उत्थान और राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए मिलकर कार्य करना चाहिए। सामूहिक प्रयासों से ही विकसित झारखण्ड का लक्ष्य हासिल होगा और विकसित भारत@2047 के निर्माण में राज्य प्रभावी योगदान दे सकेगा।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि आज छठ महापर्व के संध्या अर्घ्य भी है। उन्होंने सभी छठव्रतियों एवं श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि छठ महापर्व अब भारत की सीमाओं से आगे बढ़कर विश्व के अनेक देशों में भी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जा रहा है। सूर्योपासना का यह पर्व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, स्वच्छता, अनुशासन और सामूहिक आस्था का संदेश देता है। उन्होंने भगवान भास्कर और छठी मैया से

सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

---

(3) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज छठ महापर्व के अवसर पर राँची के बड़ा तालाब एवं हटनिया तालाब (नक्षत्र वन) में छठ पूजा में सम्मिलित होकर छठव्रतियों एवं श्रद्धालुओं के साथ अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया। इस अवसर पर उन्होंने बड़ा तालाब के समीप स्थित सूर्य मंदिर में भी पूजा-अर्चना की। राज्यपाल ने सभी को लोक आस्था के महापर्व छठ की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

राज्यपाल महोदय ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि छठ हमारी आस्था, श्रद्धा, परंपरा और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महापर्व है। सूर्योपासना का यह पर्व हमें पवित्रता, अनुशासन, संयम और समर्पण की प्रेरणा देता है। इसमें अस्ताचलगामी और उदयमान, दोनों ही सूर्य की उपासना की जाती है। छठ महापर्व की एक विशेषता इसकी सामाजिक समरसता भी है, जिसमें समाज के सभी वर्गों के लोग पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ सहभागी बनते हैं। यह हमारी

सामाजिक एकता और आपसी सद्भाव का सुंदर उदाहरण है।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि छठ महापर्व अब केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया सहित विश्व के अनेक देशों में भी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस पर्व की वैश्विक पहचान और लोगों के अपनी सांस्कृतिक जड़ों से गहरे जुड़ाव को दर्शाते हैं।

राज्यपाल महोदय ने सभी छठव्रतियों एवं श्रद्धालुओं के सुख, शांति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए भगवान भास्कर एवं छठी मैया से सभी पर अपनी कृपा बनाए रखने की प्रार्थना की।